स्वच्छ खेत–स्वस्थ समाज: 21वाँ गाजर घास जागरूकता सप्ताह

संगरिया, हनुमानगढ़ | 22 अगस्त 2026

कृषि विज्ञान केन्द्र (केवीके), ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया द्वारा 16 से 22 अगस्त 2026 तक आयोजित 21वें गाजर घास जागरूकता सप्ताह के दौरान किसानों, विद्यार्थियों एवं प्रसार कार्यकर्ताओं में गाजर घास (Parthenium hysterophorus) के दुष्प्रभावों, प्रसार एवं प्रभावी प्रबंधन के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से विभिन्न जागरूकता एवं प्रशिक्षण गतिविधियों का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. अनूप कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया ने बताया कि गाजर घास एक अत्यंत हानिकारक एवं तेजी से फैलने वाला खरपतवार है, जो फसलों की उत्पादकता को कम करने के साथ-साथ जैव विविधता एवं मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। उन्होंने बताया कि गाजर घास के लगातार संपर्क में आने से एलर्जी, दमा, त्वचा में जलन एवं डर्मेटाइटिस जैसी स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। उन्होंने प्रतिभागियों को गाजर घास के जीवन चक्र, बीज उत्पादन एवं विभिन्न माध्यमों से इसके प्रसार के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा फूल एवं बीज बनने से पहले इसके नियंत्रण पर विशेष जोर दिया।

डॉ. सी. एस. शर्मा, कृषि वैज्ञानिक (कृषि विज्ञान) ने गाजर घास के समेकित प्रबंधन के बारे में जानकारी देते हुए समय पर खरपतवार उखाड़ने, अनुशंसित खरपतवारनाशी के सुरक्षित एवं विवेकपूर्ण उपयोग तथा उचित विधि से गाजर घास से कम्पोस्ट तैयार करने की तकनीक के बारे में बताया।

श्री उमेश कुमार, विषय विशेषज्ञ (पादप संरक्षण) ने गाजर घास के प्रकोप को कम करने के लिए समय पर निराई-गुड़ाई एवं उखाड़ने, अनुशंसित खरपतवार प्रबंधन उपायों को अपनाने तथा प्रभावित क्षेत्रों में गेंदा, चिकोडा एवं बबूल जैसे प्रतिस्पर्धी पौधों के रोपण के बारे में जानकारी दी। उन्होंने गाजर घास को फूल एवं बीज बनने से पहले नियंत्रित करने को सबसे प्रभावी उपाय बताया।

रघुवीर सिंह नैन, प्रशिक्षण सहायक ने गाजर घास के जैविक अवशेषों से कम्पोस्ट तैयार करने की वैज्ञानिक विधि का प्रदर्शन किया तथा इसके संग्रहण, रख-रखाव एवं उचित अपघटन के दौरान आवश्यक सावधानियों के बारे में जानकारी दी।

अश्वनी कुमार, वरिष्ठ शोध अध्येता ने किसानों एवं आमजन से अपील की कि गाजर घास के पौधों अथवा बीज वाले अवशेषों को सड़कों, नहरों, जल निकासी मार्गों एवं सार्वजनिक स्थानों पर न फेंकें। उन्होंने बताया कि इस प्रकार लापरवाही से किए गए निस्तारण के कारण हवा एवं पानी के माध्यम से इसके बीज दूर-दराज के क्षेत्रों में पहुंचकर नए स्थानों पर गाजर घास के प्रसार का कारण बन सकते हैं।

इस जागरूकता अभियान के माध्यम से लगभग 1,200 किसानों, विद्यार्थियों एवं प्रसार कार्यकर्ताओं को गाजर घास से होने वाले स्वास्थ्य संबंधी दुष्प्रभावों, कृषि उत्पादकता में कमी, पर्यावरणीय प्रभाव एवं प्रभावी नियंत्रण उपायों के बारे में जागरूक किया गया।

सप्ताह भर चले इस अभियान में यह संदेश दिया गया कि समय पर पहचान, फूल आने से पहले नियंत्रण, उचित निस्तारण एवं सामुदायिक सहभागिता गाजर घास के प्रसार को रोकने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। किसानों, विद्यार्थियों, प्रसार संस्थाओं एवं आमजन के सामूहिक प्रयासों से गाजर घास के प्रसार को प्रभावी रूप से नियंत्रित कर स्वच्छ, स्वस्थ एवं सुरक्षित कृषि पर्यावरण का निर्माण किया जा सकता है।

21वाँ गाजर घास जागरूकता सप्ताह
(16 - 22 अगस्त 2026)
आयोजक:-
कृषि विज्ञान केन्द्र, हनुमानगढ़-1

गाजर घास जागरूकता सप्ताह

21वाँ गाजर घास जागरूकता सप्ताह
(16 - 22 अगस्त 2026)
कृषि विज्ञान केन्द्र, हनुमानगढ़-1
पधारो सा
कृषि विज्ञान केन्द्र